Page 1

B.A (III), Paper V, Social Psychology

Topic Formation of attitude:

मनोवृत्तियों का निर्माण (Formation of attitudes)

Ans- व्यक्ति जब जन्म लेता है उस समय व्यक्ति का किसी वस्तु, व्यक्ति या परिस्थिति के प्रति ना अनुकूल और ना ही प्रतिकूल मनोवृत्तियाँ होती है, परन्तु व्यक्ति जब बड़ा होता है तो समाज के साथ समाज में व्याप्त सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण के साथ उसका अंतः क्रियात्मक सम्पर्क बढ़ती जाती है और वह समाज से अनेकों प्रकार का अनुभव प्राप्त कर मनोवृत्ति का विकास करता है अतः मनोवृत्ति का विकास जन्म के बाद व्यक्ति की सामाजिक अंतःक्रियाओं के अनुरूप उसकी मनोवृत्ति का विकास होता है। मनोवृत्ति के विकास में समाज के विभिन्न कारकों का महत्वपूर्ण योगदान होता है

(a.) सामाजिक कारक (Social factors)
(b) सांस्कृतिक कारक (Cultural factors)
(c) मनोवैज्ञानिक कारक (Psychological factors)
(d.) प्रकार्यात्मक कारक (Functional factors)

(2) समाजिक कारक (Social factor)

जब बच्चा जन्म लेता उस समय परिवार में एक समाजिक प्राणी (a social being) के रूप में होता है परन्तु परिवार, पड़ोस, समुदाय, स्कूल धार्मिक संस्थान में समाजिक जीवन की शिक्षा ग्रहण कर वह समाजिक प्राणी बन जाता है और समाज के उन संस्थानों या समूहों में बच्चे जैसा शिक्षा ग्रहण करते हैं उसी प्रकार की मनोवृति का विकास बच्चों में होता है अतः बच्चे जन्म के समय एक समाजिक प्राणी (a social being) होते हैं वातावरण में प्राप्त शिक्षा के अनुसार समाजिक या असमाजिक बनते हैं समाज के द्वारा विभिन्न प्रकार से शिक्षण का प्रभाव उन पर पड़ता है जो निम्न हैं

(1) क्लासिकी अनुकूलन (Classical Conditiong)

जब बच्चे अपने परिवार या समाज के दूसरे सदस्यों से बार-बार किसी जाति, धर्म या किसी वस्तु या घटना के बारे में सकारात्मक या नकारात्मक विचार सुनते हैं तो बच्चे अनुकूलित होकर उस प्रकार मनोवृति को अपना लेते हैं।

(2) साधनात्मक अनुकूलन (Operant Conditiong)

समाजिक परिस्थितियों में समाजिक स्वीकृति (social approval) एवं अस्वीकृति (disapproval) क्रमशः पुरस्कार एवं दण्ड के रूप में मनोवृति के विकास को प्रभावित करता है

परिणामस्वरूप सकारात्मक एवं नकारात्मक मनोवृत्ति का निर्माण होता है।

(a) प्रतिनिधिमूलक शिक्षण (Vicarious learning) सामाजिक परिवेश में जब कोई व्यक्ति किसी खास मनोवृत्ति के कारण पुरस्कृत या दंडित होता है तो उसका निरीक्षण समाज के अन्य व्यक्तियों द्वारा किया जाता है एवं उसी निरीक्षण के अनुभव के आधार पर समाज के अन्य व्यक्तियों द्वारा भी सकारात्मक या नकारात्मक मनोवृत्ति सीख ली जाती है।

(b) सांस्कृतिक कारक (Cultural factor) संस्कृति एक जटिल समग्र (Complex whole) है जिसमें ज्ञान, रहन-सहन, विश्वास, कानून, शिष्टाचार, परम्परा आदि होते हैं। व्यक्ति जिस संस्कृति के परिवेश में रहता है उसे ही प्रवृत्ति का लेता है एवं उसी परिवेश के अनुकूल अपने आप में मनोवृत्ति विकसित कर लेता है यही कारण है कि सांस्कृतिक विभिन्नता व्यक्ति के मनोवृत्ति में विभिन्नता ला देती है। उदाहरण के लिए पर्दा प्रथा को के प्रति पाश्चात्य, भारतीय और इस्लामिक संस्कृतियों में अलग-अलग मनोवृत्तियाँ पाई जाती है।

परन्तु एक ही संस्कृति में रहने वाले विभिन्न प्रकार के लोगों में एक समान मनोवृत्ति पाई जाती है जैसे मृत्यु के बाद हिन्दू समाज के लोग शव को अंतिम संस्कार हेतु उसे जलाने का काम करते हैं जबकि अन्य संस्कृति को मानने वाले दफनाने का काम करते हैं।

(C) मनोवैज्ञानिक कारक Psychological factors)

व्यक्ति की मनःस्थिति (Mental state) आवश्यकताएँ (Needs), आकांक्षाएँ (Aspirations) प्रत्याशाएँ (expectations), प्रेरणाएँ (Motivation) संवेगात्मक अनुभव (emotional experience) आदि मनोवृत्ति के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देता है जैसे कोई व्यक्ति जीवन की कठिनाइयों का सामना सफलता प्राप्त करता है तो कठिनाइयों के प्रति उस व्यक्ति की मनोवृत्ति सकारात्मक होती है और उसके जीवन की कठिनाइयों को गले लगाकर सफलता प्राप्त करने की मनोवृत्ति बन जाती है या निर्माण हो जाता है।

आवश्यकताओं की पूर्ति का भी मनोवृत्ति निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका होती है यदि किसी व्यक्ति को किसी वस्तु से लक्ष्य की प्राप्ति होती है तो उसके प्रति हमारी मनोवृत्ति सकारात्मक बनती है और अगर वस्तु लक्ष्य प्राप्ति में बाधक जाए तो उसके प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति बनती है।

Page 5

संवेगात्मक अनुभव भी मनोवृत्तियों के निर्माण में सहायक होते हैं सुख के समय संवेगात्मक भाव के कारण व्यक्ति में सकारात्मक मनोवृत्ति एवं दुःख के समय व्यक्ति में नकारात्मक मनोवृत्ति का निर्माण होता है अतः यह स्पष्ट हुआ कि मनोवैज्ञानिक कारक भी मनोवृत्तियों के निर्माण में सहायक होता है।

(ब) प्रकार्यात्मक कारक (Functional factor)- किसी व्यक्ति के अपने व्यक्तित्व के शीलगुण के कारण भी व्यक्ति में सकारात्मक एवं नकारात्मक मनोवृत्ति का निर्माण होता है जैसे शांतिप्रिय व्यक्ति का मनोवृत्ति किसी वस्तु या परिस्थिति के प्रति सकारात्मक मनोवृत्ति होता है जबकि अशांत व्यक्ति का मनोवृत्ति नकारात्मक होता है अतः व्यक्तित्व के शीलगुण यथा अहं शक्ति (ego strength), उपलब्धि आवश्यकता (Need achievement), अंतर्मुखता एवं बहिर्मुखता (introversion - extroversion) का गुण, अधिपत्य (dominance) विनम्रता (Submissiveness) भी मनोवृत्ति के निर्माण को प्रभावित करता है।

विश्वास (belief) - विश्वास मनोवृत्ति के निर्माण का एक आवश्यक अंग माना जाता है जो किसी वस्तु के बारे में प्रत्यक्ष बोध एवं संज्ञानात्मक विचारों

Page 6

का एक स्थाई संगठन है जैसे हिन्दुओं का देवी-देवताओं के प्रति विश्वास या दृढ़ संकल्पित है परिणामतः हिन्दुओं की मनोवृत्ति श्रद्धा भक्ति से युक्त एवं सबल होता है

धारणाएँ (Concepts) किसी वस्तु, व्यक्ति या प्रतिस्थिति के बारे में धारणाएँ भी मनोवृत्ति निर्माण में सहायक होता है प्रत्येक व्यक्ति की धारणाएँ, उसके अनुभव, सोचने की शक्ति के ढंग पर आधारित है उसी अनुरूप उसमें मनोवृत्ति का निर्माण होता है इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का मनोवृत्ति किसी व्यक्ति, वस्तु एवं परिस्थिति के प्रति भिन्न-भिन्न होता है

प्रचार (Propaganda) प्रचार भी मनोवृत्ति के निर्माण में सहायक होता है प्रचार के माध्यम से आमलोगों के मनोवृत्ति को प्रतिकूल से अनुकूल बनाया जाता है किसी व्यवसाय में उत्पादित वस्तुओं के बाजार में अधिक बिक्री हेतु प्रचार के माध्यम से लोगों में मनोवृत्ति का निर्माण किया जाता है

Kumar Patil,
Assistant professor, Maharaja College, Ara, Department of Psychology